Impact Factor 3.025

ISSN 2349-638x

Refereed And Indexed Journal

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (AIIRJ)

Monthly Publish Journal

VOL-IV ISSUE-II FEB. 2017

Address
· Vikram Nagar, Boudhi Chouk, Latur.
· Tq. Latur, Dis. Latur 413512 (MS.)
· (+91) 9922455749, (+91) 9158387437

Email
· aiirjpramod@gmail.com
· aayushijournal@gmail.com

Website
· www.aiirjournal.com

CHIEF EDITOR – PRAMOD PRAKASHRAO TANDALE

आधुनिक तथा उत्तर-आधुनिक साहित्य में समस्याएँ

डॉ. विजयसिंह ठाकुर
- हिंदी विभागाध्यक्ष,
यशवंत महाविद्यालय,
नांदेड.

आधुनिक समय में सम्पूर्ण समाज तीव्र वैज्ञानिक, प्राद्योगिक, आर्थिक, राजनैतिक तथा शैक्षिक विकास से प्रभावित हो रहा है| आज के नगरीय परिवेश में उक्त प्रभाव अपेक्षा से कहीं अधिक तथा स्पष्ट रुप में परिलक्षित हो रहे हैं जिससे प्राचीनता एवं नवीनता के बीच संतुलन स्थापित नहीं हो पा रहा है| जहाँ एक वर्ग यदि प्राचीन परम्पराओं का मोह नहीं त्याग कर पा रहा है तो दुसरा नवीनता की ओर तीव्र गति से आकर्षित है जिससे नगरीय समाज में अन्तर्द्वन्द की प्रक्रिया चल रही है| ऐसी स्थिती में, स्वस्थ समाज एवं व्यक्ति के विकास के लिये यह आवश्यक हो जाता है कि नगरीय परिवेश में रहने वाले युवा वर्ग के सामाजिक मूल्यों एवं आकांक्षाओं का अध्ययन किय जाये| इस प्रकार का अध्ययन और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि भारतीय समाज में लम्बे समय तक महिलाओं को पुरुषों के आधीन रहना पड़ा है और आज की परिवर्तित परिस्थितीयों में, विशेषकर नगरीय परिवेश में, उनमें समानता के मूल्यों प्रति एक स्वाभाविक आकर्षण देखने को मिल रहा है|

उत्तर-आधुनिकता की प्रवृत्ति बहुत सरल नहीं है इसे एक सूत्र या समीकरण के रुप में बाँध पाना काफी कठिन हैं| इसके अपने नियम-कानून है, पक्ष-विपक्ष हैं| जहाँ एक ओर हम इसे एक ध्रुवीय दुनिया में सर्वशक्तिमान महाशक्ति का साम्राज्यवादी लिप्सा के विस्तार के रुप में देख सकते है तो दूसरी ओर इसे वंचितों के सत्तसंघर्ष तथा लोकतांत्रिक उपलब्धि के रुप में भी देखा जा सकता है| कभी तो यह भी कहा जाता है कि इस विमर्श में न कोई विचार अंतिम है न कोई विकास-व्यवस्था, साथ ही दूसरे किसी वैध-अवैध व नैतिकता से भी इसका कोई संबंध नहीं है| इसमें व्यक्ति को पूरी छूट है कि वह किसी तरह के अतियथार्थ और आभासी यथार्थ की रचना उपनी कल्पनाशक्ति के जरीये कर सकें| उसकी किसी भी सोच पर कोई प्रतिबंध नहीं है| पर ध्यान देने की बात है कि ये प्रवृत्ति समाज में कोई एक विचारधारा निर्मित नहीं कर पायेंगी, तब ऐसे में अराजकता की स्थिती उत्पन्न हो सकती है या फिर मैनेजर पाण्डे ने जैसे इसे एक उत्तर-आधुनिक विकल्प के रुप में तो देखा, लेकिन वे इसे माक्सवाद के स्थानात्नरण के रुप में स्वीकार करना नहीं चाहते| (देवेन्द्र चौबे, रेखा पाण्डे को दिए एक साक्षात्कार में . . . .)

हालांकि उत्तर-आधुनिकता विमर्श की सिद्धांतिकी अत्यंत व्यापक भी है और जटिल भी| परंतु हम उसके इस पक्ष में जाते हुए अपनी रुचि का मुख्य बिंदु उन परिधि पर रहे हाशियाकृत समूहों को केन्द्र में लाने की सार्वजनीक स्वीकृति के रुप में देख सकते हैं| भारतीय साहित्य में आज दलित विमर्श, स्त्री विमर्श, अल्पसंख्यक विमर्श और आदिवासी विमर्श जैसी प्रवृत्तियों के उभार की व्याख्या को उत्तर-आधुनिक परिप्रेक्ष्य में देखने की जरुरता है| साथ ही उत्तर-आधुनिक विमर्श कला, साहित्य और संस्कृति के क्षेत्रों की व्याख्या में अंतर्पाठीयता और पुनर्पाठ पर जोर देता है, जिसमें काफी पक्षों के खुलने की गुंजाईश है| यहाँ एक पाठ अंतिम नहीं है और न ही स्वायत्त| अत: ऐसे में यह अधिक लोकतांत्रिक व्यवस्था का निर्माण कर सकता है|

उत्तर-आधुनिक विमर्श अनुपस्थिती को दर्ज करने वाला विमर्श है यानी जो कल तक अनुपस्थित था वह आज उपस्थित होने का संघर्ष कर रहा हैं| अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पश्चिम में भारत को अनुपस्थित किया, पुरुष सत्ता ने स्त्री को, वर्ण व्यवस्था ने दलितों को, नेताओं ने जनता को, सभ्य समूहों ने आदिवासियों को, कट्टरपंथियों ने अल्पसंख्यकों को, इलेक्ट्रानिक मीडिया ने लोक कलाओं को तथा बडे अनुपस्थियों की पुन: व्याख्या के साथ इनकी अभिव्यक्ति को पूरी

लोकतांत्रिक शिष्टता के साथ स्वीकार किया जाय| समाज तथा उसकी सभी संघटक इकाइयों का संतुलित तथा सर्वांगीण विकास प्राचीन एवं नवीन के मध्य संतुलन पर निर्भर करता है| प्राय: देखने में आता है कि तीव्र तथा असमान गति से होने वाले परिवर्तन इस संतुलन को बिगाड़ देते हैं| समाज की किसी भी इकाई के लिये यह सम्भव नहीं हो पाता कि वह प्राचीनता अथवा नवीनता में से किसी एक को पूर्णरुप से स्वीकार कर सके| व्यक्ति सदैव प्राचीनता और नवीनता को एक साथ लेकर जीवन जीता है| प्राचीन एवं नवीन के बीच द्वन्द की स्थिती समाज में विघटन को उत्पन्न करने के लिये उत्तरदायी होती है, जिसका दुष्प्रभाव अन्तत: समाज की संघटक इकाई के रुप में व्यक्तियों पर ही पड़ता है| उपरोक्त परिप्रेक्ष्य में व्यक्ति एवं समाज के वांछित विकास के लिये यह आवश्यक हो जाता है कि समाज में विकसित हो रहे नवीन मूल्यों, आदर्श एवं आकांक्षाओं के साथ प्राचीन तत्वों की तत्कालीन उपयोगिता का मूल्यांकन होता रहे|

उत्तर-आधुनिकता ने साहित्य के संदर्भ को भी काफी प्रभावित किया, अब साहित्य 'पाठ' और 'पाठक' केन्द्रीत हो गया है| लेखक और आलोचक गायक हो रहे है| रोलां बार्थ कहते हैं कि पाठक का जन्म अनिवार्य रुप से लेखक की मृत्यु की कीमत पर होना चाहिए| यहां आकर हम समझ सकते हैं कि उत्तर-आधुनिकता की धारणा में 'अर्थ' न लेखक में होता है, न आलोचक में| 'अर्थ' पाठ में स्थित नहीं होता बल्कि वह 'पाठ' और 'पाठक' की अन्त: क्रिया द्वारा निर्धारित होता है| अत: न तो पाठ समान होते हैं और न एक पाठ अलग-अलग 'पठन' में समान होता है| इस दृष्टि से उत्तर-आधुनिकता का यह दावा है कि कोई भी रचना अन्य सभी रचनाओं (या पाठों) से सम्बद्ध होती है क्योंकि 'पाठ' संस्कृति के असंख्य केन्द्रों से लिए गए उद्धारणों का समुच्चय है| क्योंकि 'पाठ' ऐसे ही होते हैं, इसलिए स्वाभाविक है कि सभी पाठ अन्त: सम्बन्धित होते हैं| पाठों की यह अन्त: स्म्बन्धता अन्त: पाठीयता को जन्म देती है| उत्तर-आधुनिकता पाठ को पढ़ने की प्रक्रिया में 'पाठ' एक ओर कुछ कहता है तो दूसरी ओर कुछ छुपाता है या दबाता है| पाठ क्या कह रहा है की अपेक्षा क्या छुपा या दबा रहा है उसकी खोज महत्वपूर्ण है|

भूमंडलीकरण और आर्थिक उदारीकरण की आँधी के साथ ही भारतीय समाज कम्प्यूट्रीकरण, संचार-क्रांति और नव-उपिवेशवाद की गिरफ्त में आ गया| कुछ आन्तरिक अनिवार्यता और कुछ फैशन के स्तर पर हिन्दी उपन्यास साहित्य में गत बीस वर्षों में उत्तर-आधुनिक स्थितियों का चित्रण होने लगा इस प्रकार के साहित्य लेखन में चार प्रकार के उपन्यासकारों की गणना की जा सकती है|

उत्तर-औद्योगिक युग की विकेन्द्रित मूल्यहीन व्यवहारवादी, पॉप-संस्कृतियों को आधार बनाकर लिखने वाले उपन्यासकार| इनमें मुख्य रुप से मनोहरश्याम जोशी और सुरेन्द्र वर्मा का नाम आता है| जोशी के चार उपन्यास 'कुरु-कुरु स्वाहा, हमजाद, कसप तथा हिरया हरकयूलिस की हैरानी' को लिया जा सकता है| सुरेन्द्र वर्मा का मुझे चाँद चाहिए भी ऐसा उपन्यास है| दुसरे प्रकार के उपन्यासकार वे हैं जो उत्तर-आधुनिक विकास की अवधारणा को गरीबों / ग्रामीणों / पिछड़े वर्गों के लिए विनाशकारी मानते रहें| वीरेन्द्र जैन के दो उपन्यास 'पाए' और 'डूब' को इस श्रेणी में रखा जा सकता हैं| तीसरे प्रकार के वे उपन्यासकार हैं जो कि आधुनिकता के दौर में साहित्य में उपेक्षित अनुपस्थित अथवा बहिष्कृत पात्रों, परिस्थितियों अथवा कथानकों को साहित्य में ला रहे है| नारीवादी, दलित तथा अन्य जनजातीय क्षेत्रों से जुड़ें उपन्यासों को इसमें लिया जा सकता है| मैत्रेयी पुष्पा का 'इदन्नमम', प्रभा खेतान का 'छिन्नमस्ता' कृष्णा सोबती का 'दिलो दानिश' अनामिका का 'तिनका तिनके पास' आदि को लिया जा सकता है| चौथी तरह के उपन्यासकार वे हैं जो कि मिथकों को तोड़ कर उनमें नए अर्थ भर रहे हैं या फिर मिथकों का नए ढंग से विश्लेषण कर रहे हैं| भगवान सिंह का 'अपने-अपने राम' तथा नरेन्द्र कोहली के रामायण और महाभारत पर आधारित उपन्यास ऐसे ही हैं|

आधुनिक युग के मानव समाज में परिवर्तन की प्रक्रिया तीव्र गति से चल रही है| परिवर्तन की इस प्रक्रिया में प्राचीन एवं नवीन के बीच संघर्ष भी स्वाभाविक रुप से होता रहता है| परिणामस्वरुप पुरानी परम्पराओं, मूल्यों, आकाक्षाओं तथा आदर्श नियमों में परिवर्तन होकर उनके नये स्वरुप का निर्माण होता रहता है| इस प्रकार, समाज में विकास की प्रक्रिया निरन्तर चलती रहती है| कहानीकार उदयप्रकाश के शब्दों में अगर कहें - 'उत्तर-आधुनिकता' तो परवर्ती पूंजीवाद द्वारा उछाला गया एक नया दार्शनिक विकल्प है| इसने इतिहास और विचारधारा के अंत की घाषण की थी लेकिन यूरोप में स्वयं

इसी का अंत हो गया है| अब आजकल वहाँ 'फिलासफी ऑफ केयास' (विसंगतियों या अराजकता का दर्शन) का बोलबाला है| उनका मानना है कि सभी तरह की वैचारिक सरणियाँ और सामाजिक व्यवस्थाएँ नाकाफी और निकम्मी हो चुकी हैं| लिहाजा हिन्दी कहानी के लिए उत्तर आधुनिकता की प्रासांगिकता इस अर्थ में है कि वह भारतीय समाज और जनता को उसकी अमानुषिक परिणति का अहसास कराए, जैसा उदयप्रकाश ने 'पॉल गोमरा का स्कूटर' में कराने का प्रयास किया है| किन्तु ऐसी कहानियाँ इधर नहीं लिखी जा रही हैं जो उत्तर-आधुनिक विमर्श की विरोधी मुद्रा में खड़ी हो सकें| साहित्यकारों का एक वर्ग इस विमर्श का हिमायती है| इस कहानी के मुख्य पात्र हिन्दी कवि पॉल गोमरा के माध्यम से उत्तर-आधुनिक समाज में चतुर्दिक ध्वस और बाजारवादी युग की अमानवीयता का एहसास कराया गया है| पॉल गोमरा कथत उत्तर-आधुनिक यथार्थ के प्रतिनिधी रुप में नही बल्कि उस प्रतिनिधी के रुप में आए हैं जिनका यह उत्तर-आधुनिक उपभोकतावाद और बाजार तंत्र लगातार गला घोंट रहा है बस उसके हात दिखायी नहीं पड़ते|

मनोहरश्याम जोशी ने अपनी रचनाओं के माध्यम से कई उत्तर-आधुनिक तत्त्वों का प्रयोग किया है| मनोहरश्याम जोशी ने हरिया से एक साथ कई खेल कर दिए हैं (उत्तर-यथार्थवाद- सुधीश पचौरी, मीठी सड़ांध, पृ-१५३) - उन्होंने कथा के भोलेपन का अन्त कर दिया है (यही वोद्रीआ की 'छलना' है)| उन्होंने तर्कसंगत, वस्तुगत ज्ञान-अज्ञान के कवित भेद को हरिया के जरिए पिटा दिया है| उन्होंने पूँजी (पिटार), काम (लिंग, गूमालिंग) और विभक्त-अविभक्त चित्र के भेद मिटा दिए हैं|

उन्होंने विमर्श की भाषा को वृत्तान्त की भाषा बना दिया है, वत्तान्त को विमर्श| सारी कहानी बातचीत में नहीं, बातचीत की भाषा में चलती है| एक बिरादरी को बिरादरियत की हिफाजत के साथ| हर पाठक अपना पाठ पा सकता है कहानी में| मीडिया-माध्यमों ने 'यथार्थ' के साथ हमारे रिश्ते को इस कदर बदल दिया है कि हमारी इंद्रियाँ अब यथार्थ को सीधे-सीधे ग्रहण नहीं करती है| सूचना-क्रांति ने हमारे 'बोध' में ऐसा उलट-पलट किया है कि हमें पता ही नहीं है कि हम कब स्थानीय हैं कब भूमंडलीय| सूचना के 'अतिबोध' ने हमारी प्रकृति, मिथक चेतना, भाषा-व्यवहार, प्रतीक सभी को बदल दिया है| हर क्षेत्र पर (प्रकृति-संस्कृति पर) बहुराष्ट्रीय पूँजी का वर्चस्व| दलित और ब्राह्मण दोनों इधर लपक रहे है| 'ज्ञान' की जगह 'उपभोक्तावाद' का कब्जा| साहित्य अब मीडिया के कंधे पर चढ़कर दृश्य के महत्त्वे को स्वीकार कर रहा है जो सच में एक संकट की स्थिती है| स्थानीयता और भूमंडलीयकरण दोनों स्थितियाँ एक साथ चल रही है ऐसे में इनके पीछे निहित उद्देश्यों को खोजना होगा| संस्कृति के नाम पर आज बड़े-बड़े उद्योगपति, उपभोक्ता का बाजार में खींच कर ला रहे है, उनके इरादों को समझना होगा|

उत्तर आधुनिकता की मूल चेतना आधुनिक ही है| क्योंकि इसका विकास एवम् इसकी अस्मिता का आधार वही उद्योग हैं जो आधुनिकता की देन है| टॉयनबी के अनुसार आधुनिकता के बाद उत्तर आधुनिकता तब शुरु होती है जब लोग कई अर्थों में अपने जीवन, विचार एवम् भावनाओं में तार्किकता एवम् संगति को त्याग कर अतार्किकता एवम् असंगतियों को अपना लेते हैं| इसकी चेतना विगत को एवम् विगत के प्रतिमानों को भुला देने के सक्रिय उत्साह में दीख पड़ती है| इस प्रकार उत्तर आधुनिकतावाद आधुनिकीकरण की प्रक्रिया की समाप्ति के बाद की स्थिति है|

उत्तर आधुनिक की स्थिति में किसी भी आदर्श एवम् ज्ञान का आधार मानवता की आधुनिक चेतना होती है| उत्तर आधुनिकतावाद व्यक्ति या सामाजिक इकाइयों की स्वतंत्रता के पक्ष में तर्क करती है| व्यक्ति को सामाजिक तंत्र का मात्र एक पुर्जा न मानकर उसे एक अस्मितापूर्ण अस्तित्व प्रदान करता है| आधुनिकता के पूर्णवादी रवैये का विरोध करता है| ज्ञान की जगह उपभोग को प्राधान्य देता है| यह अतीत में जाने की छूट देता है, किन्तु उसे मनोरंजन बनाते हुए, पण्य और उपभोग की सामग्री बनाने के लिए| यह अतीत का पुनः उत्पादन संभव करता है, किन्तु उसकी भव्यता का स्वीकार नहीं करता|

यह हर महानता को सामान्य बनाता है| समग्रता का विखंडन (अस्वीकार) करता है| रचना को विज्ञापन तथा समीक्षा को प्रयोजन बना देता है| इससे शब्दार्थ में अनेकांत पैदा होती है| इसमें एक देश का सत्य, विश्व का सत्य बन गया है| कला सूचना मात्र है| यह ज्ञान शब्द का अर्थ बदल देता है, अज्ञात प्रस्तुत करता है, वैधता का एक नया आदर्स प्रस्तुत करता

है| मतैक्य के बदले मतभेद को महत्व देता है| एकरुपता का अस्वीकार करके विषमता की स्थिती का स्वीकार करता है| एकरुपता के प्रति यह विरुचि ऐतिहसिक अनुभव पर आधारित है|

यह सार्थक बहुलता का स्वीकार करता है| इसके अनुसार एकता मात्र दमनकारी व एकपक्षीय तरीकों से स्थापित की जा सकती है| एकता का सीधा अर्थ है नियमों व बलों की आवश्यकता| बहुलता व विषमता सामाजिक प्रक्रिया में अनिवार्य रुप से टकराव की स्थिती पैदा करते है| उत्तर आधुनिकता के अनुसार सापेक्षा मतैक्य न्याय प्राप्ति करने का कोई संतोष कारक समाधान नहीं दे सकता| इसलिए न्याय के ऐसे वैचारिक व व्यावहारिक पक्ष पर पहुँचना होगा जो मतैक्य से जुड़े न हों| ल्योतार ने न्याय की चेतना विकसित की ओर अन्याय के प्रति एक नई संवेदनशीलता का निर्माण किया| यह उच्च संस्कृति एवम् निम्न संस्कृति में अंतर करने की प्रक्रिया को चुनौती देता है| उत्तर आधुनिकता विचारधारा, व्यक्तिगत आस्थओं, त्रुटियों एवम् विकारों को विज्ञान से जोड़ती है|

आधुनिकतावाद के अनुसार आख्यानों की दुनिया से निकल कर ही वास्तविक ज्ञान मिल सकता है| जबकि ल्योतार का कथन है - विज्ञान और आख्यान का विरोध तर्कहीन है, क्योंकि विज्ञान अपने आप में एक प्रकार का अख्यान है| विज्ञान उन्नति का मार्ग प्रशस्त करता है, उद्योग-वाणिज्य में सहायता करता है| विज्ञान शोषन एवम् श्रम से मनुष्य को मुक्त करता है| विज्ञान विचारों की मुक्ति एवम् विकास के द्वारा खोलता है| इसलिए महा आख्यानों को त्याग कर अनिश्चितता एवम् सापेक्षता की उत्तर आधुनिक परिस्थिती को स्विकार कर लेना चाहिये| उत्तर आधुनिकता तार्किकता के अति उपयोग पर प्रश्नचिन्ह खड़ा करती है| इसके अनुसार मनुष्य पूर्णत: स्वायत्त, उच्च एवम् श्रेष्ठ है| वह अपने मानस एवम् कामुकता के अलावा न तो किसीके प्रति उत्तरदायी है और न ही किसी पर आश्रित है| उत्तर आधुनिकता पीछे की ओर लौटना नहीं चाहता| यह उन पारंपरिक एवम् धार्मिक प्रतिमानों को पुन: स्थापित नहीं करना चाहता, जिन्हें आधुनिकता ने अस्वीकार कर दिया था| यह ऐसे प्रतिमानों का अस्वीकार करता है जिनमें लिखित भाषा एवम् तर्कशास्त्रीय तार्किकता पर बल दिया जाता है| उत्तर आधुनिकता निश्चितता के असंदेहास्पद आधार पर किसी ज्ञानतंत्र की स्थापना की कठिनाइयों का स्वीकार करता है| उत्तर आधुनिकतावादी ऐसे समाज की खोज में लगे हैं जो अदमनकारी हो| यह निश्चितता, क्रमिकता, एकरुपता में विश्वास नहीं करता, अस्पष्ट तथा अनायास को मान्यता देता है|

उत्तर आधुनिकता की समस्याएँ :

इसमें सिध्दांत-निर्माण नहीं होता| यह अंतरों को परम बनाना चाहते है| यह समालोचनात्मक शक्ति समाप्त कर देता है| संस्कृति के नाम पर होनेवाले शोषण एवम् अन्याय के प्रति सहिष्णु होने के नाम पर उदासीन होता है| मनुष्य की संभावनाओं को कम कर आँकता है| इस रुप में यह नाशवाद है| यह किसी एक व्याख्या को असंभव करता है| यह पीढे की ओर लौटना नहीं चाहता| यह आधुनिक सांस्कृतिक-सामाजिक अनुभव को पीछे धकेलता है| इसमें ऐतिहासिकता की अनुपस्थिती होती है|

उत्तर आधुनिकता की उपलब्धियाँ:

बहुलतावाद उत्तर आधुनिकता का मुख्य केन्द्र है| पूर्णता का विघटन इसके लिए आवश्यक शर्त है| प्रौद्योगिकी, नई तकनीकें लगातार हमारे ज्ञान को प्रभावित करती है| अत: हमें प्रासंगिक व वास्तविक ज्ञान की आंतरिक विशेषताओं के प्रति सजग होना होगा| उत्तर आधुनिकतावाद आधुनिकवाद का भविष्योन्मुखी परिवर्तनीय रुप है| इसमें अंतर-व्यक्तिपरकता को जीवंत रखा जाता है| निजी संगत (प्राईवेसी) का खात्मा इसकी महत्वपूर्ण उपलब्धि है|

संक्षेप में, उत्तर आधुनिकतावाद की प्रतिक्रियाएँ ऐसे नये मार्ग दिखाती हैं जिनसे नये बौध्दिक वातावरण में आधुनिक दर्शन की उपलब्धियों की पुन:परीक्षा की जा सकती है एवम् उनके महत्व का पुन:मूल्यांकन करने के लिए नई दृष्टि देती हैं|

उत्तर आधुनिकता और साहित्य:

कवि किसी निश्चित काव्य-प्रकार में रचना नहीं करता, मुक्त रुप से सर्जन करता है| काव्य-रचनाओं में अनेक अधूरी पंक्तियाँ होती हैं, जिसे पाठक को स्वयं अपनी कल्पना, अपने अनुभव के आधार पर समझना होता है| काव्य का आकार या पाठ महत्वपूर्ण नहीं होते, उसमें से व्यक्त होनेवाले अर्थों को, संदर्भों को उजागार करना महत्वपूर्ण होता है| कविता मुक्त विचरण करती है| कविता स्वानुभव रसिक नहीं, सर्वानुभव रसिक बन गई है| कवि की दृष्टि एवम् सृष्टि स्व से सर्वकेन्द्री बन गई है| उत्तर आधुनिक कविता वाद विहीन है| दलित साहित्य, आँचलिक उपन्यास, नारी-विमर्श की रचनाएँ इसका परिणाम है| कृति का अंत हो रहा है| पाठ कृति की जगह ले रहा है| पाठ और विखंडन उत्तर आधुनिकतावादी है| यह कलाकार के लुटते जाने का वक्त है|

संदर्भ ग्रन्थ और पत्रिकाएँ -

i. उत्तर-अधुनिकता कुछ विचार, संपादन देवी शंकर नवीन एवं सुशान्त कुमार मिश्र
ii. अंतिम दो दशकों का हिन्दी साहित्य
iii. अद्य-पाद्य विन्यास-सुधीश पचौरी
iv. उत्तर-यथार्थवाद-सुधीश पचौरी
v. उत्तर-आधुनिकतावाद-जगदीश चतुर्वेदी
vi. उत्तर-आधुनिकतावाद और दलित साहित्य-कृष्णदत्त पालीवाल
vii. पत्रिकाएँ
viii. कथादेश-जुलाई २००९-विचारधारा का संकट और स्त्री-विमर्श का लोकतंत्र-विनोद शही
ix. कथादेस- 'हिन्द स्वराज्य' की शती पर गाँधी का उत्तर आधुनिक बोध, वीरेन्द्र कुमार बरनवाल
x. समकालीन भारतीय साहित्य - मई-जून २००८, उत्तर आधुनिकता से संवाद, रवि श्रीवास्तव

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com